एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 01, अंक: 04 (सितम्बर-अक्टूबर, 2021)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

सरसो में रोग व कीट का प्रबंधन

(*शिशपाल कांटवा[1], मुकेश जाखड़[2] एवं नरेन्द्र पादरा[1])
[1]शोधार्थी, सैम हिग्गिनबोतोम कृषि प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तरप्रदेश
[2] शोधार्थी, राजा बलवंत सिंह कृषि महाविद्यालय, बिचपुरी, आगरा, उत्तरप्रदेश
*shishpalkantwa08@gmail.com

भारत तिलहन का चौथा सबसे बड़ा योगदान है और कुल तिलहन उत्पादन में रेपसीड और सरसों का योगदान लगभग 28.6% है। सोयाबीन और ताड़ के तेल के बाद यह दुनिया का तीसरा महत्वपूर्ण तिलहन है। सरसों के बीज और उसके तेल का इस्तेमाल खाना बनाने में किया जाता है। युवा पत्तियों का उपयोग सब्जी के लिए किया जाता है। इसकी खली का उपयोग मवेशियों को खिलाने के लिए किया जाता है।पहले भूरे सरसों की खेती अधिकांश क्षेत्र में की जाती थी, अब इसकी खेती का क्षेत्र कम हो गया है और भारतीय सरसों द्वारा प्रतिस्थापित किया गया है। भूरे रंग के सरसों के दो प्रकार लोटनी और तोरिया हैं। तोरिया कम अवधि की फसल है जिसे सिंचित अवस्था में बोया जाता है। गोभी सरसों नई उभरती तिलहन है, यह हरियाणा, पंजाब और हिमाचल प्रदेश में उगाई जाने वाली लंबी अवधि की फसल है।

रोग और उनका नियंत्रण

- **अंगमारी रोग:-** तने, शाखाओं, पत्रक और फलियों पर विकसित बिंदी जैसे शरीर वाले गहरे भूरे रंग के धब्बे। अधिक प्रकोप होने पर तना और फली मुरझा जाती है
- नियंत्रण:- खेती के लिए प्रतिरोधी किस्मों का प्रयोग करें। रोग होने पर इंडोफिल एम-45 या कैप्टन @ 260 ग्राम/100 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ छिड़काव करें।

- **छाछया रोग:-** पत्तियों की निचली सतह पर सफेद रंग की वृद्धि देखी जाती है। पत्ते हरे या पीले रंग के होकर छडने लग जाते हैं
- नियंत्रण:- फसल की बुवाई से पहले पिछली फसल का मलबा नष्ट कर दें। इंडोफिल एम-45 @ 400 ग्राम के साथ 150 लीटर पानी प्रति एकड़ में 15 दिनों के अंतराल के साथ चार बार छिड़काव करें।

चित्र 1: अंगमारी रोग

चित्र 2: छाछ्या रोग

चित्र 3: सफेद रोली रोग

- **सफेद रोली रोग :-** पत्तियों, तनों और फूलों पर सफेद दाने दिखाई देते हैं। प्रभावित हिस्से में सूजन देखी जाती है। संक्रमण के कारण फूल बाँझ हो जाते हैं।
- नियंत्रण:- मेटालैक्सिल 8% मैनकोजेब 64% @ 2 ग्राम प्रति लीटर पानी की छिड़काव या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 25 ग्राम प्रति लीटर पानी की छिड़काव करें।

कीट और उनका नियंत्रण

- **चेपा कीट:-** यह कीट रस चूसते हैं और पौधे कमजोर हो जाते हैं, पीला पड़ जाता है और पौधे बौने रह जाते हैं और बाद की अवस्था में फली नहीं लगते हैं
- नियंत्रण:- नियंत्रण के लिए फसल की समय से बुवाई करें। नाइट्रोजन उर्वरकों के अत्यधिक प्रयोग से बचें। यदि खेत में इसका प्रकोप दिखे तो कीटनाशक ऑक्सीडेमेटोन 250 मि.ली. या क्लोरपाइरीफॉस 200 मि.ली. को 100-125 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ में छिड़काव करें।

- **चित्रित बग:-** यह कीट पौधों की पत्तियाँ एवं कोमल तनों का रस चूसते हैं। इस कीट से ग्रस्त पौधे रोगी पौधों के समान हो जाते हैं। प्रभावित पौधों की बढ़वार रुक-सी जाती है तथा उपज पर काफी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।
- नियंत्रण:- समय पर फसल की बुवाई करनी चाहिये। कीटग्रस्त फसलों पर मैलाथियॉन 0.1 श्रतिशय या डाईमेथोएट 0.03 प्रतिशत या इमीडाक्लोरीप्रिड 0.02 प्रतिशत का छिड़काव करना चाहिये।

- **कैटरपिलर:-** युवा लार्वा ज्यादातर पत्तियों की निचली सतह पर सामूहिक रूप से भोजन करते हैं। कैटरपिलर पत्तियों पर फ़ीड करते हैं और गंभीर संक्रमण में पूरी फसल खराब हो जाती है।
- नियंत्रण:- यदि खेत में इसका प्रकोप दिखे तो मैलाथियान 5% डस्ट 15 किग्रा या डाइक्लोरवोस 200 मि.ली. को 100-125 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

चित्र 4: चेपा कीट

चित्र 5: चित्रित बग

चित्र 6: कैटरपिलर